पत्रिका

Bhopal City, 08/05/2022, Page 22

नदी का अस्तित्व बचाने मलबा तो निकाल रहे पर उठा नहीं रहे

इतिहास बनती शिरिन नदी को बचाने शुरू हुई अधूरी पहल

XPOSE रिपोर्टर

xpose.bhopal@epatrika.com

भोपाल . बड़े तालाब में मिलने वाली शिरिन नदी इतिहास न बन जाएं, उसे बचाने के प्रयास तो शुरू कर दिए हैं, लेकिन अधूरे प्रयास ढाक के तीन पात साबित होते नजर आ रहे हैं। पड़ताल में सामने आया कि इस साल समय से पहले शिरिन नदी की सफाई उसके अस्तित्व को बचाने रखने के लिए प्रशासन से शुरू कर दी है। जिसमें बड़ी चूक देखने को मिल रही है। यहां जेसीबी से मलबा तो निकाला जा रहा है, लेकिन उठाया नहीं जा रहा।

तेज गर्मी में सूखता मलबा सख्त जमीन का रूप लेता जा रहा है। बारिश में फिर यह अधिकांश मलबा तालाब में चला जाएगा। जो हिस्सा नहीं बहेगा, उस पर अतिक्रमण शुरू हो जाएगा।

उल्लेखनीय है कि भोपाल को भले ही तालाबों के शहर के नाम से जाना जाता है लेकिन इन तालाबों के संरक्षण पर न तो आम लोग ध्यान दे रहे हैं और न जिम्मेदार सरकारी एजेंसियां। यही कारण है कि तालाब लगातार सिकुड़कर खत्म होते जा रहे हैं। लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए तालाबों को पूरकर कब्जे कर रहे हैं और निगम का अमला उन्हें बचाने में लगा हुआ है। बड़ा तालाब के ही हिस्से शिरीन नदी क्षेत्र में यही स्थिति बन गई है। इसके करीब बने मकानों को वैधता दिलाने के लिए इसे चारों ओर से नगर निगम द्वारा ही मलबा डालकर पूरा जा रहा है। आसपास के रहवासी भी इसमें कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

निगम का एसटीपी भी यहां बना हुआ है। उसके बगल से आधा तालाब पूरा जा चुका है।

भोपाल में सिद्दीक हसन खां तालाब लगभग पूरा अवैध कब्जों की भेंट चढ़ गया है। मोतिया तालाब को कचरा फेंककर खराब कर दिया गया। अब बड़े तालाब के हिस्से शिरिन नदी क्षेत्र को सुखाने का खेल चल रहा है। दरअसल वर्तमान में लागू पुराने मास्टर प्लान के अनुसार बड़े तालाब के फुल टैंक लेवल के 50 मीटर दायरे में निर्माण प्रतिबंधित हैं।

जो निर्माण हो चुके हैं वे भी मास्टर प्लान के अनुसार अवैध हैं। अब इन मकानों को बचाने के लिए तालाब के एफटीएल को ही सिकोडने का काम चल रहा है ताकि उनके मकानों की एफटीएल से दूरी 50 मीटर हो जाए। शिरिन नदी क्षेत्र में नगर निगम सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाया हुआ है। उसके सामने बड़ा तालाब है। उसे कोहेफिजा

की तरफ से मलबा डालकर पूर दिया गया है। लगभग 30 मीटर तक तालाब में मलबा भरकर उसे समतल कर दिया गया है। अब यही खेल वीआइपी रोड के बगल से चल रहा है। यहां भी जेसीबी मशीन से मलवा तो निकाला जा रहा है,लेकिन उसे वहीं किनारे पर पटका जा रह है। इतना ही नहीं स्थानीय लोग यहां कचरे के साथ मेडिकल वेस्ट तक डाल रहे हैं। यही हाल रहा तो कुछ सालों में नदीं का हिस्सा सिकुड़कर खत्म हो जाएगा।

ईमानदारी से हो प्रयास

नगर निगम के अधिकारी ही बड़े तालाब का संरक्षण और इसे संवारने की बजाय इसे खत्म करने में लगे हैं। जानबूझकर तालाब में फेंके जाने वाले कचरे और मलबे आदि की अनदेखी की जा रही है। नदी का अस्तित्व बचाने के लिए मलबा निकाला तो जा रहा है,लेकिन उठाना नहीं जा रहा है। हमारा मानना है कि ईमानदारी से प्रयास होने चाहिए तभी यह धरोहर बच पाएगी।

-मो.सऊद, पूर्व पार्षद

शिरिन नदीं से लगे कोहेफिजा क्षेत्र में यहां दो प्लांट है, एक से नदीं मार्ग का पानी सीधा तालाब में नहीं जा रहा है। उसे फिल्टर कर छोड़ा जा रहा है। दूसरा पीएचई का पुराना प्लांट है। इसमें ईदगाह की पहाड़ी व अन्य क्षेत्र के नालों व नालियों से बहकर आने वाले गंदे पानी को सीधे पाइपों के माध्यम से यहां से बड़वई की ओर छोड़ा जाता है।

-कमाल मुस्तफा,
सीवेज प्लांट, पीएचई

शिरिन नदी के तालाब से लगे इस हिस्से को बचाने के लिए गाद ही नहीं निकाली जा रही है, बल्कि इसके मार्ग का दूषित पानी को फिल्टर कर यहां छोड़ा भी जा रहा है। इसके आसपास अतिक्रमण न हो इसके लिए बाउंड्री भी बनाई हुई है। सौंदर्यकरण के साथ इस बार नदीं के इस हिस्से को ज्यादा गहरा किया जा रहा है। निकाली गाद को यहां से हटाया भी जा रहा है।

संतोष गुप्ता,प्रभारी
अधिकारी,झील संरक्षण

© 2022 All Rights Reserved. Powered by *Summit (http://www.summitindia.com)*